अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 1, मार्च 2026, पृष्ठ 544–550
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट), 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n1.2026.051

बिहार प्रदेश के क्षेत्रीय भाषा अंगिका आरो सांस्कृतिक विरासत

डॉ. गौतम कुमार यादव *

प्राप्तिः 31 मार्च 2026 / स्वीकृतः 31 मार्च 2026 / प्रकाशितः 31 मार्च 2026
जर्नल वेबसाइटः https://anubodhan.org

भारत देश के ऐतिहासिक आरो सांस्कृतिक मानचित्र पे अवस्थित बिहार राज्य अंतर्गत अंगप्रदेश केरो स्थान अति विशिष्ट छै। 'अंग' के चर्चा वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, तंत्रग्रंथ, बौद्ध आरो जैन साहित्य में मिलै छै। जखनी भारतीय संस्कृति आरो सभ्यता के उषाकाल छेलै, तखनी अंगजनपद असुर आरो वैदिक धर्म के मिश्रण भूमि बनलै। विद्वानसिनी रो मत छै कि अति प्राचीन काल में असुरो के एकटा सभ्य जाति व्रात्य आरो आर्य ने मिलीके यै क्षेत्र में एकटा नया संस्कृति रो निर्माण करलकै। यै क्षेत्र में एकटा स्वतंत्र भाषा भी विकसित होलै, जेकरो प्राचीन नाम 'आंगी' मिलै छै। वै समय के भाषाविदसिनी आंगी के 'प्राच्या' के अंतर्गत राखलकै। पुरानो ग्रंथ 'भरतनाट्यम्' में भारतवर्ष केरो प्रचलित भाषा के सात भागो में बाँटलो गेलो छै–

''मागध्यावन्तिका प्राच्या शूरसेन्यार्ध मागधी। वाह्लिका दाक्षिणात्या च सप्त भाषा प्रकीर्तिता।।''

अर्थात् मागधी, अवन्तिका, प्राच्या, शूरसेनी, अर्धमागधी, वाह्लिका आरो दाक्षिणात्या। 'प्राच्या' के अंतर्गत–'वैदेही' एखनिको मैथिली, 'आंगी' एखनिको अंगिका, 'वांगी' एखनिको बंगला आरो 'मागधी' एखनिको मगही के हीं पुरानो नाम छिकै। भाषाविदसिनी रो अनुसार प्राच्य–देश प्रयाग के पूरब में छेलै। 'राजशेखर' नें आपनो 'काव्य–मीमांसा' अध्याय 17 में एकरा

*सहायक प्राध्यापक, विश्वविद्यालय अंगिका विभाग, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर–7

वाराणसी सें पूरब मानले छै आरो एकरो अंतर्गत अंग, कलिंग, कोसल, उत्कल, मगध, विदेह आरनी जनपदो के गिनैले छै। यै सिनी जनपदो के लोकभाषा प्राकृत के एक शाखा या उपशाखा छेलै। 'हेमचन्द्र' नें प्राकृत के उत्पत्ति संस्कृत सें मानले छै–''प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं तत् आगतं वा प्राकृतम्'' मुख्य प्राकृत में शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्धमागधी आरो पैंचासी मानलो गेलो छै।

विश्वप्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी के मत छ कि बंगला, असमिया, उड़िया आरो बिहार के सब आर्य–भाषा प्राचीन पूर्वी क्षेत्र यानी प्राच्य–देश के प्राकृत भाषा मागधी सें ही निकललो छै। बंगला भाषा के उत्पत्ति आरो विकास पे आपनो ग्रंथ में हुनी मानै छै कि उत्तर बंगाल में आर्य भाषा के प्रचार मिथिला सं, मध्य आरो पश्चिम बंगाल में आर्यभाषा के प्रचार 'अंग' सें होलो छै। यै तरह सें प्राचीनकाल सें ही भारतीय आचार्य आरो विद्वानसिनी नें 'आंगी' के उल्लेख एकटा स्वतंत्र भाषा के रूपो में करने ऐलो छै।

इतिहासकार आरो आधुनिक विद्वानसिनी रो मतानुसार अंगजनपद के क्षेत्र उत्तर सें दक्खिन ताँय 302 किलोमीटर लंबा आरो पूरब सें पच्छिम ताँय 294 किलोमीटर चौड़ा यानी 50,408 वर्ग किलोमीटर मानलो जाय छै। यै क्षेत्र केरो मुख्य भाषा अंगिका छिकै। 'अंगिका' नामकरण महापंडित राहुल सांकृत्यायनजी के द्वारा करलो गेलो छै। वर्तमान में अंगक्षेत्र के लगभग 7 करोड़ लोगो रो भाषा अंगिका छिकै आरो 'मंजूषा' लोककला।

बिहार राज्य के पनरो टा अंगिका भाषी जिला–किशनगंज, अररिया, पूर्णियाँ, कटिहार, मधेपुरा, सहरसा, सुपौल, भागलपुर, बाँका, जमुई, मुंगेर, लखीसराय, शेखपुरा, बेगुसराय, खगड़िया आरो झारखंड राज्य के सात टा अंगिका भाषी जिला–साहेबगंज, पाकुड़, गोड्डा, दुमका, देवघर, गिरीडीह, जामताड़ा आरो पश्चिम बंगाल रो चार टा अंगिका भाषी जिला–मालदा, उत्तर दिनाजपुर, मुर्शिदाबाद आरो वीरभूम। हेकरो अलावा देश के आरोसिनी स्थान दिल्ली, मुम्बई सहित भारत के हर राज्य में भी बड्डी तदाद में अंगिका भाषा–भाषी लोगसिनी निवास करै छै।

सृष्टि के आदिकाल सें ही यै अंगजनपद केरो अस्तित्व के कायम करलो गेलो छै। एकरो ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आरो प्राकृतिक धरोहरसिनी आय–ताँय विद्यमान छै–

प्राकृतिक धरोहर मंदार पर्वत

भागलपुर शहर सें दक्खिन लगभग 45 किलोमीटर के दूरी पे अवस्थित बाँका जिला अंतर्गत मंदार पर्वत, जेकरो ऊँचाई लगभग 700 फूट छै। ई ऐतिहासिक आरो पौराणिक धरोहर छिकै। एकरो कथानक समुद्र मंथन सें जुड़लो होलो छै। ई पर्वत तीन धरमो –हिन्दू, जैन आरो आदिवासी आस्था केरो संगम छिकै। मुख्य रूप सें ई पर्वत समुद्रमंथन केरो मथनी भगवान विष्णु द्वारा मधु–कैटभ असुर वध केरो स्थान आरो जैन तीर्थंकर वासुपूज्य केरो निर्वाणस्थली के रूपो में विख्यात छै।

अंगक्षेत्र अंतर्गत जेठौरनाथ महादेव मंदिर

ई एकटा अति प्राचीन आरो ऐतिहासिक शिवमंदिर छिकै, जे लगभग 1400 बरस पुरानो मानलो जाय छै। चांदन नदी रो किनारे जेठौर पहाड़ रो तलहटी में स्थित ई मंदिर राजा शशांक गौर द्वारा स्थापित एकमुखी शिवलिंग के लेली प्रसिद्ध छै, जेकरा देश के चुनिंदा एकमुखी शिवलिंगो में सें एक मानलो जाय छै। सावन रो महीना आरो महाशिवरात्रि में यहाँ दूर–दूर सें श्रद्धालु आबै छै आरो सुलतानगंज सें गंगाजल लै के 50 किलोमीटर पैदल चली के भगवान शिव केरो जलाभिषेक करै छै आरो अजगैबीनाथ, सिंहेश्वरनाथ, बटेश्वरनाथ, बासुकीनाथ मंदिरो के स्मरण करी–करी विभिन्नता में एकता रो प्रदर्शन करीके अलख जगाबै छै।

कर्णगढ़ केरो ऐतिहासिकता

दानवीर कर्ण केरो नगरी भागलपुर प्रचीन अंगप्रदेश बिहार रो ऐतिहासिकता आरो सांस्कतिक केन्द्र छिकै। एकरा सिल्क सिटी के नाम सें भी जानलो जाय छै। गंगा रो किनारा पे बसलो ई शहर आपनो समृद्ध संस्कृति, महाभारतकालीन कर्णगढ़, चंपापुर जैन के लेली प्रसिद्ध छै, जे एकरो पौराणिक आरो ऐतिहासिक विरासत के आय–ताँय जीवित राखले छै।

मुगेर जिला केरो ऐतिहासिकता

मुंगेर जिला अंगक्षेत्र के अंतर्गत गंगानदी किनारे अवस्थित ऐतिहासिक स्थल छिकै, जे आपनो प्राचीन किला, मीरकासिम केरो गुफा आरो बिहार योग विश्वविद्यालय लेली प्रसिद्ध छै। ई मुंगेर शहर में स्थित छै आरो 1864 ई0 में नगरपालिका रो दर्जा मिललो छै, जे प्राचीनकाल सें सामरिक रूप सें अत्यन्त महत्वपूर्ण छै।

संत–परंपरा के आध्यात्मिक स्थली कुप्पाघाट

भागलपुर शहर के गंगा किनारे अवस्थित कुप्पाघाट ध्यानस्थली महर्षि मँहीँ परमहंसजी महाराज द्वारा स्थापित सत्संग आरो साधना केन्द्र, आध्यात्मिक ज्ञानयज्ञ रो माध्यम सें व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण लेली प्रसिद्ध छै।

सिल्कसिटी के रूप में आर्थिक आरो सांस्कृतिक पहचान

अंगप्रदेश केरो चर्चा 'भागलपुरी सिल्क' (तसर रेशम) रो बिना आधा–अधूरा रहतै। रेशम बुनाई यहाँकरो सदियों सें पुरानो परंपरा रहलो छै। यहाँकरो तसर सिल्क नै केवल भारत में, बलुक विदशो में भी आपनो गुणवत्ता लेली प्रसिद्ध छै। यही विशेषता सें भागलपुर सिल्क सिटी कहलाय छै। रेशम के धागा रो बुनाई यहाँकरो सामाजिक ताना–बाना के भी दरसाबै छै। यहाँ हिन्दू आरो मुस्लिम जुलाहासिनी मिली–जुली के यै विरासत के आय–ताँय आगू बढ़ाय रहलो छै। यहाँ गंगा–जमुनी तहजीव के एकटा बेहतरीन उदाहरण देखै लेली मिलै छै।

लोकगाथा आरो धार्मिक परंपरा

अंगक्षेत्र केरो संस्कृति में बिहुला–विषहरी के गाथा रो विशेष महत्व छै। यहाँ के लोकमान्यता रो अनुसार बिहुला के सती–सावित्री के दर्जा प्राप्त छै। ई कथा एकटा नारी के जीवन रो संकल्प आरो साहस के प्रतीक छिकै, जे देवतारूपी मनसा देवी विषहरी सें लड़ीके आपनो मृतपति बाला लखीन्दर के प्राण के वापस ले आनै छै। प्रत्येक साल भादो महीना में एकरो पूजा धूमधाम सें मनैलो जाय छै।

छठ पूजा महापर्व

छठ पूजा महापर्व दिवाली के छ दिन बाद शुरू होय छै। लोक आस्था रो ई महापर्व में व्रत छठी माय रो होय छै आरो पूजा सूर्यदेव भगवान के होय छै। यै तरह सें सूर्य ही यै पर्व के आध्यात्मिक देवता आरो शक्ति के वाहक छिकै। एकरा में व्रतीसिनी 36 घंटा निर्जला उपवास रखीके डूबतें आरो उगतें सूर्य के अर्घ्य दै के संतान, सुख–समृद्धि आरो आरोग्य लेली आशीर्वाद माँगै छै।

अंगक्षेत्र रो सांस्कृतिक धरोहर मंजूषाकला

मंजूषाकला अंगप्रदेश भागलपुर केरो सांस्कृतिक धरोहर छिकै। ई लोककला बिहुला–विषहरी के गाथा सें प्रेरित छै। एकरा विश्व केरो पैहलो चित्रकथा

पे आधारित कला मानलो जाय छै। यै कला के सबसें बड़ो खासियत एकरो संयोजन होय छै। एकरा में विशेषकरीके तीन रंगो के ही प्रयोग होय छै–गुलाबी, हरा आरो पीरो । गुलाबी उत्साह, हरा–प्रकृति आरो वंश वृद्धि के आरो पीरो रंग सुख–शांति केरो प्रतीक छिकै। गाथा में बिहुला के दर्द देखलो जाय–

"होरे दुई चारि लात गे सोनिका के मारल गे।
होरे जाइबे–2 गे भैयाखौकी डोम के आवास गे।।"

अंगप्रदेश क प्राचीन धरोहर विक्रमशिला विश्वविद्यालय

बिहार के भागलपुर जिला अंतर्गत कहलगाँव के निकट अंतीचक गाँव अवस्थित विक्रमशिला विश्वविद्यालय आठमीं–नौमीं शताब्दी में पालवंश के शासक राजा धर्मपाल द्वारा स्थापित एकटा प्राचीन प्रमुख बौद्ध–शिक्षा केन्द्र छेलै। ई नालंदा विश्वविद्यालय के समकालीन तंत्रयान विद्या केरो केन्द्र आरो अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त छेलै, जेकरा 13वीं शताब्दी में तुर्क आक्रमणकारी मो0 बिन बख्तियार खिलजी द्वारा नष्ट करी देलो गेलै। आय ई स्थान एकटा प्रमुख पर्यटक स्थल के रूपो में प्रसिद्ध छै। यहाँ पुरातात्विक उत्खनन सें पाप्त खंडहर, भव्य स्तूप आरो मूर्तिसिनी एकरो गौरवशाली इतिहास रो झलक प्रस्तुत करै छै। सरकार द्वारा फेनू सें एकरो पुनरुद्धार आरो नया विश्वविद्यालय निर्माण लेली पहल करलो जाय रहलो छै।

खान–पान आरो जीवन शैली

अंगप्रदेश अंतर्गत खान–पान सादा, पौष्टिक आरो स्थानीय उपज पे आधारित रहलो छै। कतरनी चावल, कतरनी चूड़ा, जर्दालु आम, दाल–भात, लिट्टी–चोखा, मखाना आरो मछली यहाँकरो प्रमुख व्यंजन छिकै। सादगीपूर्ण जीवनशैली में मौसमी सब्जी आरो चना के सत्तू रो विशेष महत्व छै, जे आय भी यहाँकरो संस्कति में रचलो –बसलो छै।

सारांश

अंगप्रदेश रो भाषाई आरो सांस्कृतिक विशिष्टता अत्यन्त ही गौरवशाली विशाल आरो विविधतापूर्ण छै। 'अंग' प्राचीन भारत के सोलो महाजनपदो में सें एक छेलै। यै क्षेत्र रो मातृभाषा अंगिका छिकै। यहाँकरो अंगिका भाषा में मिठास छै ते 'मंजूषाकला' में नारी–जीवन रो संघर्ष आरो विजय रो झलक। अंगिका लोकगाथा 'बिहुला–विषहरी' रो कथावस्तु सिर्फ धार्मिक

कथाभर नै छै, बलुक ई लोकगाथा अंगप्रदेश के प्राचीन इतिहासो के कथात्मक रूप छिकै, जे कथा अंगप्रदेश के महाजनपदीय काल के वाणिज्य, सामाजिक व्यवस्था, पर्यावरण– परिवेश आरनी चांदो सौदागर, शिवकन्या विषहरी के क्रोध, बिहुला के सतीत्व, नेतुला के तंत्र–मंत्र जेहनो कथा के संयुक्त रूपो सें स्पष्ट करलो गेलो छै। बिहुला–विषहरी लोकगाथा रो आरंभ मंदार पर्वत के निकट सोनादह पोखर में शिव के स्नान सें शुरू होय छै। नहाबै के दौरान हुनको जटा के पाँच टा बाल टूटी के जल पे तैरते –तैरते पोखर के किनारी लागी जाय छै, जे कुच्छु दिनो में कमल फूलो में परिवर्तित होय जाय छै। जबे एक दिन हौ पाँचो टा कमल फूल पे पार्वती के नजर पड़ै छै, ते ओकरा लानीके शिवमठ में राखी दै छै, जे बादो में पाँचो बहिन के रूपो में जन्म ले लै छै। पाँचोटा बहिन रो नाम छिकै– मैना, दोतिला, बिषहरी, जया आरो पदमा। यै पाँचो बहिन नें पार्वती के माय कहै छै, ते पार्वती के मनो में शंका के लहर उठै छै आरो वें होकरासिनी के पुत्री नै मानी के होकरा ऊपर लांछन लगाबे लागै छै। यहाँ ताँय कि पार्वती नें क्रोधित होयके पाँचो बहिन पे आक्रमण भी करी दै छै, जेकरो कारण विषहरी ने पार्वती के डँसी लै छै। बाद में शिवजी के कहला पे पाँचो बहिन ने पार्वती के जिलाय दै छै। आगू चलीके पाँचो बहिन नें पृथ्वीलोक पे आपनो पूजा लेली शिवजी पे दबाव बनाबे लागै छै। मतरकि शिवजी नें स्पष्ट तौर पे पाँचो बहिन के कही दै छै कि तोरो पूजा यदि चांदा सौदागरें दे दिये , तभिये लरी–लोगें तोरो पूजा करतौ। तोरासिनी हुनका लगाँ जो। तबे पाँचो बहिन चांदो सौदागर के पास ऐलै आरो हुनका सें आपनो पूजवाबै लेली प्रस्ताव रखलकै। यै बातो पर चांदो सौदागर भड़की जाय छै आरो विषहरी के बेंगखौकी कही के पूजा दै लेली तैयार नै होलै, जेकरो कारण सें चांदो सौदागर के अपनो हठ लेली बड्डी कष्ट भोगै ले पड़ै छै। गाथा के रूपो में देखलो जाय–

होरे हम ना पूजबै हे हनुमन्त कानी बेंग खौकी हे।
होरे हम पूजई रे छियै ईश्वर महादेव हे।
होरे धन ते सम्पति हे बनियाँ डूबल डेंगी नाव हे।
होरे देखले से आबै रे बनियाँ बुड़ल डेंगी नाव हे।
होरे सातो बाप पूत आबे रे चांदो त्रिवेनी पीए हे।
होरे उब–डूब करिहैं रे चांदो ढोका पानी पीए हे।।

निष्कर्ष के तौर पे ऊपर के तथ्यात्मक विश्लेषण सें अंगप्रदेश रो प्राचीन पराक्रम आरो गरिमा के विरासत के संरक्षित करलो जाय। बिहुला रो सतीत्व आरो रेशम केरो चमक यै क्षेत्र के अद्‌भुत आरो अद्वितीय

पहचान दिलाबै छै। आज जरूरत छै कि यै लोक–संस्कृति, अंगिका भाषा आरो मंजूषा लोककला के समृद्ध आरो संरक्षित करते हुवे एकरा आधुनिक मंचो पे उचित सम्मान दिलैलो जाय, ताकि आपनो ई गौरवशाली विरासत पे भविष्य में आबैवाला भावी पीढ़ी गर्व महसूस करे सके ।

संदर्भ सूची

1. रघुनंदन झा राही आरो सुभाषचन्द्र 'भ्रमर' द्वारा संपादित पुस्तक 'प्रतिनिधि अंगिका काव्य' निराला प्रिंटिंग प्रेस, दुमका, पृष्ठ ii-xxviii
2. चन्द्रप्रकाश जगप्रिय द्वारा संपादित 'उत्तरांगी' जुलाई–सितम्बर 2003, जे.के. प्रिंटर्स, भागलपुर, पृ. 33–36
3. चंद्रप्रकाश जगप्रिय द्वारा संपादित पुस्तक 'अगिका गद्य गौरव' अंगिका संसद, सराय, भागलपुर पृ. 69–70
4. बाबू महादेव प्रसाद सिंह द्वारा संपादित पुस्तक 'बिहुला–विषहरी' संपूर्ण नौ खंड, प्रकाश पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ. 18, 19, 75
5. डॉ. योगेन्द्र द्वारा संपादित स्मारिका 'अंगिका महोत्सव' 2019, माँ वैष्णवी प्रिंटर्स, पटना, पृ. 15
6. लेखक त्रय – डॉ. डोमन साहु 'समीर', डा.तेजनारायण कुशवाहा आरो डॉ. अमरेन्द्र द्वारा लिखित पुस्तक 'अंगिका साहित्य केरो इतिहास' हिन्दी अकादमी, हैदराबाद, पृ. 2, 19, 21, 22, 23, 24, 25, 31

Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).